महापाषाणकालीन पदचिह्न और मानव आकृति

[स्रोत: द हिंदू](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केरल के मडक्किई में प्रागैतिहासिक महापाषाणकालीन पदचिह्नों के 24 जोड़े और एक मानव आकृति **की** खोज की गई है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह **मेगालिथिक/महापाषाण काल के हैं।**

निष्कर्षों की मुख्य बातें क्या हैं?

- **सांस्कृतिक महत्त्व:** सभी पदचिह्न **पश्चिम की ओर इशारा करते हैं,** जो संभवतः उनके प्रतीकात्मक महत्त्व को दर्शाते हैं।
  - पुरातत्त्वविदों का मानना है कि ये **मृत व्यक्तियों की आत्माएँ हैं,** जबकि स्थानीय निवासी इन्हें **देवी का प्रतीक** मानते हैं।
- **आयु:** अनुमान है कि यह **2,000 वर्ष से अधिक पुराना है,** जो केरल के ऐतिहासिक आख्यान को गहराई प्रदान करता है।
- **अन्य खोजें:** यह **कर्नाटक के** उडुपी ज़िले के **अवलाक्की पेरा में** पाई गई **प्रागैतिहासिक रॉक कला से मिलती जुलती है।**
  - केरल में **प्रागैतिहासिक खोजों में शामिल हैं:**
    - **कासरगोड** में **एरिकुलम वलियापारा** में मंदिर की सजावट।
    - नीलेश्वरम में **बाघ की नक्काशी चल रही है।**
    - चीमेनी अरियित्तापारा में **मानव आकृतियाँ।**
    - कन्नूर में एट्टुकुदुक्का में **बैल की आकृतियाँ।**
    - वायनाड में **एडक्कल गुफाओं की नक्काशी।**

नोट: प्रागैतिहासिक काल का तात्पर्य लिखित अभिलेखों के अस्तित्व **से पहले के** मानव इतिहास की अवधि से है। इसमें **आरंभिक मानव अस्तित्व से** लेकर लेखन प्रणालियों के आगमन तक का समय शामिल है, जो आमतौर पर **3000 ईसा पूर्व से पहले** का है।

महापाषाण संस्कृति क्या है?

- **महापाषाण संस्कृति के बारे में:** महापाषाण संस्कृति एक **प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक परंपरा को संदर्भित करती है, जिसकी विशेषता बड़े पत्थर की संरचनाओं या स्मारकों** का निर्माण है, जिन्हें महापाषाण/मेगालिथ के रूप में जाना जाता है।
- **महापाषाणों का कालक्रम:** ब्रह्मगिरी **उत्खनन से** दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृतियों का काल **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी के बीच का पता** चलता है।
- **भौगोलिक वितरण:** महापाषाण संस्कृति का मुख्य संकेंद्रण **दक्कन में है, विशेष रूप से [गोदावरी नदी](#)** के दक्षिण में।
  - यह पंजाब के मैदानों, सिंधु-गंगा बेसिन, राजस्थान, गुजरात और जम्मू एवं कश्मीर के **बुर्जहोम** में पाया गया है, जिनमें **सेराइकला (बिहार), खेड़ा (उत्तर प्रदेश) और देवसा (राजस्थान)** प्रमुख स्थल हैं।
- **लोहे का उपयोग:** दक्षिण भारत में मेगालिथिक काल एक पूर्ण विकसित **[लौह युग संस्कृति](#) का प्रतीक है,** जहाँ लौह प्रौद्योगिकी का **पूर्ण उपयोग किया गया था।**
  - इसका प्रमाण विदर्भ के **जूनापानी से लेकर** तमिलनाडु के [आदिचनल्लूर](#) तक मिले **लौह हथियारों और कृषि उपकरणों से मिलता है।**
- **शैल चित्र: महापाषाण स्थलों पर पाए गए [शैल चित्रों में](#)** शिकार, पशु आक्रमण और समूह नृत्य के दृश्य दर्शाए गए हैं।

[//](#)

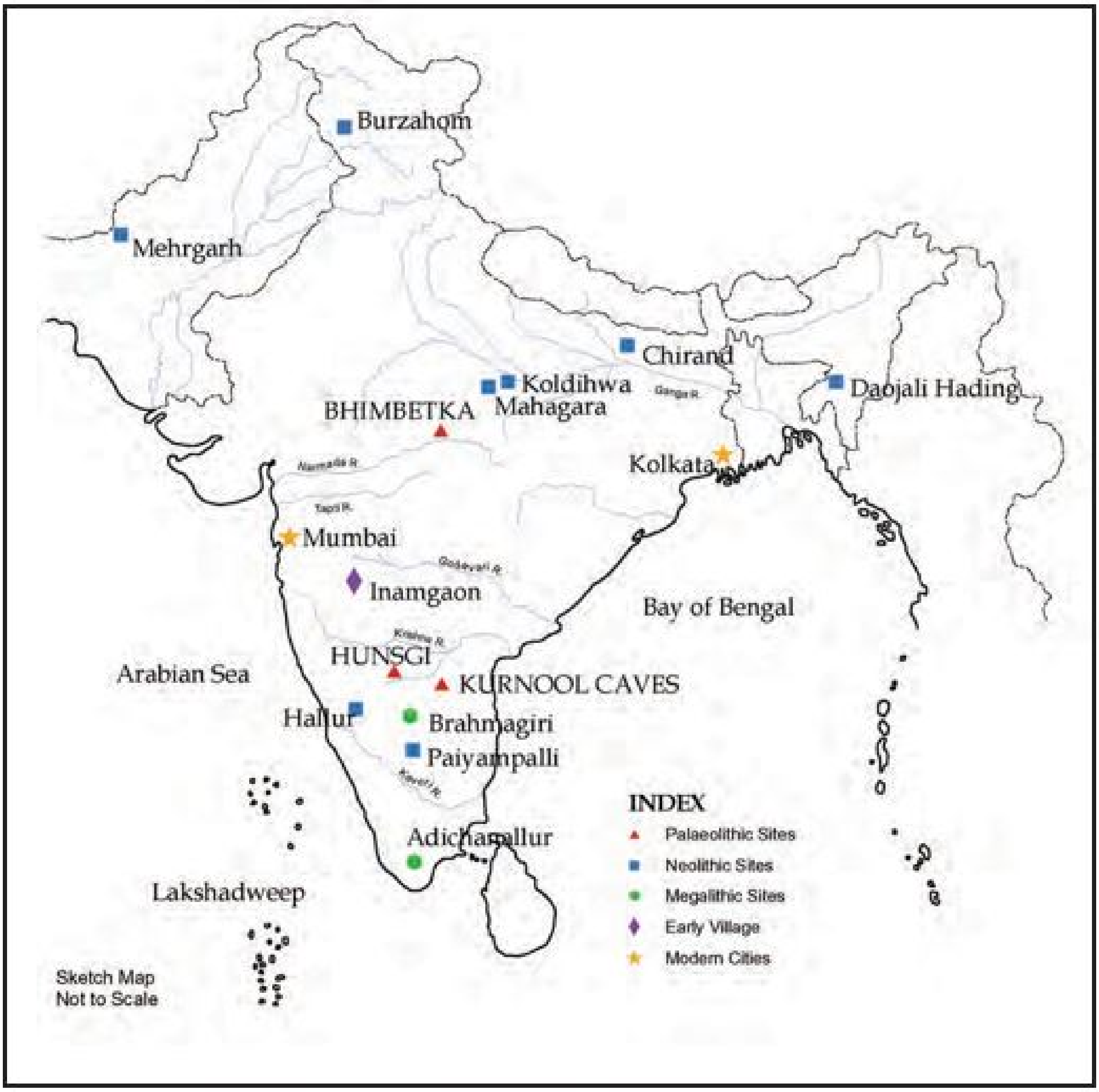

MAP: Some Important Archaeological Sites

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQ)

Q. निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें: (2021)

(ऐतिहासिक स्थान) (प्रसिद्धि)

1. बुर्जहोम : शैलकृत देव मंदिर
2. चंद्रकेतुगढ़ : टेराकोटा कला
3. गणेश्वर : ताम्र कलाकृतियाँ

उपर्युक्त में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1
(b) 1 और 2
(c) केवल 3
(d) 2 और 3

उत्तर: (d)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/megalithic-footprints-and-human-figure